2. सूरदास

कवि परिचय

सूरदास हिंदी काव्य–जगत् के सूर्य माने जाते हैं। कृष्ण–भक्ति की अजस्र धारा प्रवाहित करने में उनका विशेष योगदान है। उनके जीवन–वृत्त के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। अधिकतर विद्वान सूरदास का जन्म सन् 1483 ई. (संवत् 1540 वि०) और निधन संवत् 1620 वि० मानते हैं। उनका जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक ग्राम के एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ। वे जन्मांध थे। उनका कंठ बड़ा मधुर था। वे पद–रचना करके गाया करते थे। बाद में वे आगरा और मथुरा के बीच स्थित गऊघाट पर जाकर रहने लगे। वहीं श्री वल्लभाचार्य जी के संपर्क में आए और पुष्टिमार्ग में दीक्षित हुए। उन्हीं की प्रेरणा से सूरदास ने दास्य एवं दैन्य भाव के पदों की रचना छोड़कर वात्सल्य, माधुर्य भाव और सख्य भाव के पदों की रचना करना आरंभ किया। पुष्टिमार्ग के अष्टछाप भक्त कवियों में सूरदास अग्रगण्य थे। पुष्टिमार्ग में भगवान की कृपा या अनुग्रह का अधिक महत्त्व है। इसे काव्य का विषय बनाकर सूरदास अमर हो गए। जब सूरदास का अंतिम समय निकट था तब श्री विट्ठलनाथ जी ने कहा था – ''पुष्टि–मार्ग को जहाज जात है, जाय कछू लैनों होय सो लेउ।''

काव्य परिचय

सूरदास जी की रचनाओं में सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी को ही विद्वानों ने प्रामाणिक रूप से मान्यता दी है। परन्तु 'सूरसागर' की जितनी ख्याति हुई है उतनी शेष दो कृतियों को प्राप्त नहीं हुई।

भाव पक्ष

सूरदास कृष्ण भक्ति की सगुण शाखा के कवि थे। उनकी भक्ति को दो भागों में विभाजित करके देखना अधिक उपयुक्त होगा – एक, श्री वल्लभाचार्य जी से साक्षात्कार के पूर्व की भक्ति जिसमें दैन्य भावना और सूर की गिड़गिड़ाहट अधिक है। दूसरी, श्री वल्लभाचार्य जी से संपर्क के बाद की भक्ति अर्थात् पुष्टिमार्गीय भक्ति, जिसमें सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की भक्ति है। उन्होंने विनय, वात्सल्य और श्रृंगार तीनों प्रकार के पदों की रचना की थी। उन्होंने संयोग और वियोग दोनों प्रकार के पद रचे। 'सूरसागर' का भ्रमर–गीत प्रसंग वियोग श्रृंगार का श्रेष्ठ उदाहरण है। सूर का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। ये वात्सल्य का कोना–कोना झाँक आए हैं।

कला पक्ष

सूरदास की काव्यभाषा ब्रजभाशा है। लोकोक्ति और मुहावरों का भी सहज रूप में प्रयोग किया है। उनके पदों में लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों का समुचित प्रयोग मिलता है। 'सूरसारावली' में दृष्टिकूट पद हैं, जो दुरूह माने जाते हैं। विरह वर्णन में व्यंजना शब्द–शक्ति का प्रयोग अधिक है। सूर के सभी पद गेय हैं। उनकी शैली में भी विविधता है। उन्होंने अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

पाठ–परिचय

प्रस्तुत संकलन में सूरदास के विनय, बाल–वर्णन और भ्रमरगीत के पद संकलित हैं। विनय के पदों में कवि ने अपनी दीनता व्यक्त की है। उन्होंने अपनी तुच्छता का विस्तृत वर्णन करते हुए दीनानाथ, अशरण–शरण, सर्वशक्तिमान भगवान की असीम कृपा का गुणगान किया है और उनसे भक्ति की याचना की है। उनकी भक्ति का मूलाधार पुष्टिमार्गीय भक्ति है, जिसमें सख्य भाव की बहुलता है।

सूर बाल–मनोविज्ञान के पंडित थे। बाल–क्रियाओं का जितना विशद् वर्णन सूर–काव्य में मिलता है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। वात्सल्य–वर्णन का कोई क्षेत्र उनसे नहीं बचा है। वात्सल्य का मुख्य केंद्र यशोदा का हृदय है। उनकी चेष्टाएँ माता के हृदय में आशा–आकांक्षाओं का संचार करती हैं।

भ्रमरगीत विप्रलंभ शृंगार का काव्य है। इसमें विरह की सभी दशाओं का चित्रण है। यह एक उपालंभ काव्य है। विरह–व्यथित गोपियों के तर्क के कारण उद्धव ब्रह्म और योग–साधना को भूल जाते हैं और सगुण भक्ति को स्वीकार कर लेते हैं।

•••

विनय

(1)

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै ?
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी फिरि जहाज पर आवै।।
कमल–नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै।
परम गंग कौ छाँड़ि पियासो, दुरमति कूप खनावै।।
जिहि मधुकर अंबुज–रस चाख्यौ, क्यौं करील फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।

(2)

अविगत–गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस, अन्तरगत ही भावै।।
परम स्वाद सबही जु निरन्तर, अमित तोष उपजावै।
मन–बाणी कौं अगम–अगोचर, सो जानै जो पावै।।
रूप–रेख–गुण जाति–जुगुति–बिनु, निरालंब मन चक्रित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातैं, सूर सगुन–लीला पद गावै।।

(3)

छाँड़ि मन हरि विमुखन कौ संग।
जाके संग कुबुद्धी उपजै परत भजन में भंग।।
कहा भयौ पय, पान कराये विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर खवाए, स्वान न्हवाए गंग।।

खर को कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अंग।
गज को कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै गहि छंग।।
पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतौ करत निषंग।
सूरदास खल कारीकामरि चढ़ै न दूजो रंग।।

(4)

अब कै राखि लेहु भगवान।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम डरिया, पारधि साधेबान।।
ताकै डर तैं भज्यौ चहत हौं, ऊपर ढुक्यो सचान।
दुहूँ भाँति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान?
सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, सर छूट्यौ संधान।
सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय–जय कृपानिधान।।

बाल–लीला

मैया, मैं तो चंद–खिलौना लैहौं।
जैहौं लोटि धरनि पर अवही, तेरी गोद न ऐहौं।।
सुरभी को पय–पान न करिहौं, बेनी सिर न गुहैहौं।
ह्वै हौं पूत नंद बाबा कौ, तेरौ सुत न कहै हौं।।
आगे आउ, बात सुन मेरी, बलदेवहिं न जनैहौं।
हँसि समुझावति, कहती जसोमति, नई दुलहनिया दैहौं।।
तेरी सौं, मेरी सुनि मैया, अवहिं वियाहन जैहौं।
सूरदास ह्वै कुटिल बराती, गीत सुमंगल गैहौं।।

(2)

जब हरि मुरली अधर धरी।
गृह–व्यौहार तजे आरज–पथ, चलत न संककरी।।
पद–रिपु पट अंटक्यौ न सम्हारति, उलट न पलट खरी।
सिब–सुत–वाहन आइ मिलें हैं, मन–चित–बुद्धि हरी।।
दुरि गए कीर, कपोत, मधुप, पिक, सारँग सुधिबिसरी।
उडुपति विद्रुम बिम्ब खिसाने, दामिनि अधिक डरी।।
मिलि हैं स्यामहिं हंस–सुता–तट, आनँद–उमँग भरी।
सूर स्याम कौं मिली परस्पर, प्रेम–प्रवाह ढरी।।

(3)

गए स्याम ग्वालिनि घर सूनै।
माखन खाइ, डारि सब गोरस, बासन फोरि किए सब चूनै।।
बड़ौ माट इक बहुत दिननि कौ, ताहि कर्‌यौ दस टूक।
सोवत लरिकनि छिरकि मही सौं हँसत चले दै कूक।।

आइ गई ग्वालिनि तिहि औसर, निकसत हरि धरि पाए।
देखे घर बासन सब फूटे, दूध दही ढरकाए।।
दोउ भुज धरि गाढ़े करि लीन्हे, गई महरि के आगै।
सूरदास अब बसै कौनह्याँ, पति रहि है ब्रज त्यागै।।

भ्रमरगीत

(1)

आयौ घोष बड़ौ व्यौपारी।
लादि खेप गुन ज्ञान–जोग की ब्रज में आय उतारी।।
फाटक दै कर हाटक माँगत भौरे निपट सुधारी।
धुर ही तें खोटो खायो है लये फिरत सिर भारी।।
इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अजानी।
अपनो दूध छाँड़ि को पीवै खार कूप को पानी।।
ऊधो जाहु सवार यहाँ तें वेगि गहरु जनि लावौ।
मुँह माँग्यो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ।।

(2)

ऊधो! कोकिल कूजत कानन।
तुम हमको उपदेस करत हौ भस्म लगावन आनन।।
औरों सब तजि, सिंगी लै–लै टेरन चढ़न पखानन।
पै नित आनि पपीहा के मिस मदन हति निज बानन।।
हम तौ निपट अहीरि बाबरी जोग दीजिए ज्ञाननि।
कहा कथत मामी के आगे जानत नानी नानन।।
सुंदरस्याम मनोहर मूरति भावति नीके गानन।
सूर मुकुति कैसे पूजति है वा मुरली की तानन।।

(3)

ऊधो! जाहु तुम्हैं हम जाने।
स्याम तुम्हैं ह्याँ नाहिं पठाए तुम हौ बीच भुलाने।।
ब्रजवासिन सों जोग कहत हौ, बातहु कहन न जाने।
बढ़ लागै न विवेक तुम्हारो ऐसे नए अयाने।।
हमसों कही लई सो सहिकै जिय गुनि लेहु अपाने।
कहँ अबला कहँ दसा दिगंबर संमुख करौ पहिचाने।।
साँच कहौ तुमको अपनी सौं बूझति बात निदाने।
सूर स्याम जब तुम्हैं पठाए तब नेकहु मुसुकाने।।

(4)

ऊधो! भली करी अब आए।
विधि–कुलाल कीने काँचे घट ते तुम आनि पकाए।।
रंग दियो हो कान्ह साँवरे, अँग अँग चित्र बनाए।
गलन न पाए नयन–नीर ते अवधि अटा जो छाए।।
ब्रज करि अँवाँ, जोग करि ईंधन सुरति–अगिनी सुलगाए।
फूँक उसास, विरह परजारनि, दरसन आस फिराए।।
भए सँपूरन भरे प्रेम–जल, छुवन न काहू पाए।
राजकाज तें गए सूर सुनि, नंदनन्दन कर लाए।।

(5)

ऊधो! मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
हंससुता की सुन्दरि कगरी अरू कुंजन की छाहीं।।
वै सुरभी, वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।
ग्वालबाल सब करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं।।
यह मथुरा कंचन की नगरी मनि–मुक्ताहल जाहीं।
जबहिं सुरति आवति वा सुख की जिय उमगत तनु नाहीं।।
अनगन भाँति करी बहु लीला जसुदा नंद निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि कहि पछिताहीं।।

शब्दार्थ

अनत–अन्यत्र/ खनावै–खुदाए/ छेरी–बकरी/ अविगत–निराकार ब्रह्म/ परम स्वाद–अलौकिक आनंद/ निरालंब–बिना आधार का/ अरगजा–कपूर, केसर और चंदन से बना सुगंधित पदार्थ/ मरकट–बंदर/ पारधि–बहेलिया/ ढुक्यौ–झपटा/सचान–बाज/ गुहै हौं–गुथवाऊँगा/ आरजपथ–आर्य मार्ग/ शिव–सुत–वाहन–मयूर/ चूनै– चूर–चूर/ पति–प्रतिष्ठा/ घोष–अहीरों की बस्ती/फाटक–फटकन/हाटक–सोना/ डहकावे – बहके/ निदाने–सच, वास्तविक/कुलाल–कुम्हार/ हंससुता–यमुना/खरिक–गाय दुहने का स्थान।

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. ''जब हरि मुरली अधर धरी'' पद में वर्णन किया है –
   (क) मुरली की मधुरता का। (ख) कृष्ण के मुरली वादन का।
   (ग) गोपियों की मुग्धता का। (घ) मुरली–ध्वनि के अलौकिक प्रभाव का। ( )
2. ''आयौ घोष बड़ौ व्यौपारी'' कथन में छिपा है –
   (क) व्यंग्य (ख) उपालंभ
   (ग) उपेक्षा (घ) घृणा ( )

उत्तरमाला – (1) ग (2) क

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै'' पंक्ति के मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए कौन–सा उदाहरण दिया है ?
2. सूरदास ने हरि–भक्ति से विमुख लोगों का साथ छोड़ने का आग्रह क्यों किया है ?
3. ''ताकै डरतैं भज्यौ चाहत हौं, ऊपर ढुक्यो सचान'' पंक्ति में सचान किसका प्रतीक है ?
4. गोपियाँ उद्धव को मुँह माँगी वस्तु देने को कब तैयार थी ?
5. ग्वालिन के सूने घर में जाकर कृष्ण ने क्या किया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. गोपी–उद्धव संवाद को भ्रमरगीत के नाम से क्यों पुकारा जाता है ?
2. ''ऊधो! भली करी अब आए'' गोपियों ने उद्धव के आगमन को उचित बताते हुए क्या व्यंग्य किया है?
3. ''मैया, मैं तो चंद–खिलौना लैहौं।'' पद में बाल स्वभाव की कौनसी विशेषता बताई गई है और माता ने उसका समाधान किस प्रकार किया ?
4. ''ऊधो! कोकिल कूजत कानन'' पद में गोपियों ने योग साधना का खंडन किस प्रकार किया है ?
5. ''सूर स्याम जब तुम्हैं पठाए तब नेकहु मुसकाने'' पद में गोपियों ने उद्धव से यह प्रश्न क्यों किया ? कारण स्पष्ट कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'सूर ने बाल लीला का मनोहारी वर्णन किया है।' उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. सूरदास जी ने निर्गुण का खंडन और सगुण का समर्थन किया है। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. गोपियाँ कृष्ण की अनन्य प्रेमिका थीं। भ्रमरगीत के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) ऊधो! कोकिल ....दिखावौ।

(ख) जब हरि ....प्रेम प्रवाह ढरी।

(ग) अब कै राखि........................कृपानिधान।

(घ) ऊधो! मोहि.......................पछितातीं।

यह भी जानें

हिंदी अंक – १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप – 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

टिप्पणी – संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा, परंतु राष्ट्रपति, संघ के किसी भी राजकीय प्रयोजन के लिए भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप के साथ–साथ देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकते हैं।

•••